Sanginee

संगिनी

Smile... Stride... Scintillate

जनवरी-मार्च 2024

नालको NALCO

A Navaratna CPSE | A Government of India Enterprise

Editor-in-Chief
Sasmita Patra, President
NALCO Mahila Samiti

Editorial Board
Swayamprava Rath
Shikta Singh
Himanshu Rai

Co-ordinator
Kamana Singh

Design concept
Bibhu Prasad

January to March

प्रकाशक
नालको महिला समिति के
संयुक्त प्रयास से राजभाषा प्रकोष्ठ,
नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

संपादकीय

वर्ष 2024 के प्रथम तिमाही तथा वित्त वर्ष 2023-24 के अंतिम तिमाही के 'संगिनी' के इस अंक के सम्पादकीय के माध्यम से आप सबसे चर्चा करने हेतु एक बार पुन: प्रस्तुत हूँ। वर्तमान तिमाही में हमने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया, जो कि हम आधी आबादी के सम्मान में मनाकर इस संसार की आधारशिला के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। इस दौरान समाचार चैनलों, अखबारों, सोशल मीडिया पर जागरूकता कार्यक्रमों के आयोजन होते हैं। किंतु वास्तव में आवश्यकता है, इन चर्चाओं को अपने जीवन में साकार कर इस धरती माँ को बेहतर बनाने हेतु प्रयास करने का। मैं आप सभी पाठकगणों से अपेक्षा करती हूँ कि आप आने वाले समय में स्वयं के प्रयास से महिला समुदाय के जीवन में उत्तरोत्तर सुधार लाएँगें तथा इसकी शुरूआत अपने परिवार, अपने घर, अपने पड़ोस से करेंगे।

आने वाले समय में लोकतंत्र का सबसे बड़ा पर्व हमारे देश में मनाया जाएगा। मैं इस सम्पादकीय के माध्यम से आप सबसे अपने मतदान के अधिकार का उपयोग करने तथा अपने देश, समाज एवं स्वयं के लिए सरकार के चुनाव में भाग लेने का आह्वान करती हूँ। हमारे ओडिशा के लिए विधान सभा तथा लोकसभा का चुनाव एक साथ होने के कारण यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

सांस्कृतिक दृष्टि से भी आगामी समय में हम सब होली, गुड फ्राइडे, रामनवमी, चैत्र पूर्णिमा, ईद आदि जैसे त्यौहारों की रंगारंग में हम मशगूल रहेंगे। आप सभी इन आयोजनों में उल्लास पूर्वक भाग लेते हुए अपनी परम्परा, अपनी विरासत से आने वाली पीढ़ियों को परिचित कराएँ। ये त्यौहार तथा आयोजन ही हमें अपनी मिट्टी से बाधें रखते हैं। इस अंक में हमने महिला सशक्तिकरण, अपने त्यौहारों, अपने संबंधों, अपने महापुरूषों को ध्यान में रखते हुए रचनाकारों की रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। वास्तविक मायनों में आज महिला सशक्तिकरण की बात तकनीकी की बात के साथ ही सार्थक होगी। सशक्त महिला ना सिर्फ अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति ही सजग होगी, बल्कि तकनीकी के दौर में सुरक्षा को अपनाते हुए, सतर्क व सजग होकर अपने कृत्यों से समाज व परिवार को सशक्त करेगी।

इन्हीं शब्दों के साथ, मैं संगिनी का वर्तमान अंक आप सभी पाठकगणों को समर्पित करती हूँ।

बंदे उत्कल जननी!!

सस्मिता पात्रा

ସଂପାଦକୀୟ

ବର୍ଷ ୨୦୨୪ ପାଇଁ ସଙ୍ଗିନୀର ପ୍ରଥମ ତ୍ରୟ ମାସିକ ପତ୍ରିକାର ଏହି ବିଶେଷ ଅଙ୍କର ସମ୍ପାଦକୀୟ ମାଧ୍ୟମରେ ଆପଣମାନଙ୍କ ସହ ପୁନଃ ଚର୍ଚ୍ଚା କରିବାର ଅବସର ମିଳିଲା ବୋଲି ମୁଁ ବିଶେଷ ଆନନ୍ଦିତ। କିଛି ଦିନ ତଳେ ଆମେ ଅନ୍ତଃରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ମହିଳା ଦିବସ ପାଳନ କରିସାରିଛେ। ଆମ ସମାଜର ଏକ ଅଭିନ୍ନ ଅଙ୍ଗ ନାରୀ। କେବଳ ଜନସଂଖ୍ୟାର ଅଧା ଅଂଶ ଦୃଷ୍ଟିରୁ ନୁହେଁ ବରଂ ସମାଜ ଗଠନରେ ନାରୀର ଅବଦାନ ଓ ଭୂମିକା ପାଇଁ ସେ ସମାଜର ଏକ ଅଭିନ୍ନ ଅଙ୍ଗ। ସମଗ୍ର ସଂସାରର ଆଧାରଶୀଳା ହିଁ ନାରୀ। ସେହି ନାରୀ ପ୍ରତି ଆମର ଆଭାର ବ୍ୟକ୍ତ କରିବା କୃତଜ୍ଞତା ଜ୍ଞାପନ କରିବା, ଆମ ସମାଜର ପ୍ରଥମ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ। ଏହି ପରିପ୍ରେକ୍ଷିରେ ସମସ୍ତ ଟିଭି ଚ୍ଯାନେଲ, ଖବରକାଗଜ, ସୋସିଆଲ ମିଡିଆରେ ଜନ ଜାଗରଣ ଆଣିବା ପାଇଁ ଅନେକ କାର୍ଯ୍ଯକ୍ରମ ଆୟୋଜନ କରାଯାଇଥିଲା। ବାସ୍ତବରେ ଏହି ଚର୍ଚ୍ଚାକୁ ଯଦି ଆମେ ଆମ ଜୀବନ ଶୈଳୀରେ ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ଭାବରେ ଅନୁସରଣ କରିପାରିବା, ଆମ ପୃଥିବୀ ସୁନ୍ଦର କରିବାର ପ୍ରୟାସ କରିପାରିବା ତେବେ ତାହା ହିଁ ପ୍ରକୃତ ନାରୀ ଜାଗରଣ ପରିଚୟ ହେବ।

ମୁଁ ଏହି ସଙ୍ଗିନୀ ମାଧ୍ୟମରେ ପାଠକବନ୍ଧୁ ମାନଙ୍କୁ ଅନୁରୋଧ କରୁଛି ଆପଣମାନେ ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ଭାବେ ସମୁଦାୟ ମହିଳା ଗୋଷ୍ଠୀର ଜୀବନରେ ଉତ୍ତରୋତ୍ତର ସୁଧାର ପାଇଁ ଚେଷ୍ଟିତ ହେବେ। ଏହାର ପ୍ରଥମ ପର୍ଯ୍ୟାୟ ନିଜ ପରିବାର, ନିଜ ଘରରୁ ହିଁ ଆରମ୍ଭ ହେଉ। ଆଗାମୀ ଦିନରେ ଲୋକତନ୍ତ୍ରର ମହାପର୍ବ "ନିର୍ବାଚନ" ଆରମ୍ଭ ହେବାକୁ ଯାଉଛି। ଏହି ସଙ୍ଗିନୀର ସମ୍ପାଦକୀୟ ମାଧ୍ୟମରେ ମୁଁ, ଆପଣମାନଙ୍କୁ ପ୍ରେରଣା ଦେବାକୁ ଚାହେଁ: ଆପଣମାନେ ନିର୍ବାଚନରେ ସକ୍ରିୟ ଭୂମିକା ଗ୍ରହଣ କରନ୍ତୁ। ଆପଣମାନଙ୍କ ମତଦନର ଅଧିକାରର ସଦ୍ ଉପଯୋଗ କରନ୍ତୁ। ଆମ ଓଡ଼ିଶାରେ ଲୋକସଭା, ବିଧାନସଭାର ନିର୍ବାଚନ ଏକ ସାଙ୍ଗରେ ହେବାକୁ ଯାଉଛି। ତେଣୁ ଆପଣମାନଙ୍କ ଭୂମିକା ଆହୁରି ଗୁରୁତ୍ବପୂର୍ଣ୍ଣ।

ସାଂସ୍କୃତିକ ଦୃଷ୍ଟିକୋଣରୁ ଦେଖିଲେ, ଆମେ ଆଗାମୀ ଦିନରେ ହୋଲି, Good Friday, ରାମନବମୀ, ଚୈତ୍ର ପୂର୍ଣ୍ଣିମା, ଇଦ୍ ଆଦି ପର୍ବ ହର୍ଷ ଉଲ୍ଲାସର ସହିତ ପାଳନ କରିବା। ଆପଣମାନେ ନିଶ୍ଚିତ ଭାବରେ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଉତ୍ସାହ ସହିତ ଏହାକୁ ପାଳନ କରିବେ ବୋଲି ମୋର ଆଶା। ଏହି ପାର୍ବଣ ମାଧ୍ୟମରେ ଆମେ ଆମର ଐତିହ୍ୟ, ଆମ ସଂସ୍କୃତି ଆମ ପରମ୍ପରାକୁ ଆମ ଯୁବ ପିଢୀଙ୍କ ପାଖରେ ପହଞ୍ଚାଇ ପାରିବା। ଏହାହିଁ ଆମକୁ ଆମ ମାଟି ସହ ଯୋଡି ହେବାର ମନ୍ତ୍ର ଶିଖାଏ ।

ଏହି ବିଶେଷାଙ୍କରେ ଆମେ ନାରୀ ସଶକ୍ତିକରଣ, ପର୍ବପର୍ବାଣୀ, ଆମ ସମ୍ବନ୍ଧ, ମହାପୁରୁଷଙ୍କ ଜୀବନୀ ଇତ୍ୟାଦି ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିଛୁ। ନାରୀ ସଶକ୍ତିକରଣ ଏକ ସ୍ବପ୍ନ ନୁହେଁ ବରଂ ଏହା ଏବେ ସାକାର ହେବାର ସମୟ ଆସିଛି। ସଶକ୍ତ ମହିଳା ହିଁ କେବଳ ନିଜ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ପ୍ରତି ଧ୍ୟାନ ଦେଇ ପାରିବ। ନିଜ ସୁରକ୍ଷା ପ୍ରତି ସଜାଗ ରହି ପାରିବ। ପରିବାରକୁ ତଥା ସମାଜକୁ ସଶକ୍ତ କରିପାରିବ। ଆପଣମାନେ ସମସ୍ତେ ଏଥିପ୍ରତି ପୂର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ କରନ୍ତୁ। ମୋର ଏହି ଆଶା ଓ ବିଶ୍ବାସ ସହିତ ସଙ୍ଗିନୀର ଏହି ବିଶେଷାଙ୍କକୁ ପାଠକବନ୍ଧୁଙ୍କୁ ସମର୍ପିତ କରୁଛି।

ସସ୍ମିତା ପାଣ୍ଡ

मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति

मनुष्य ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ कृति है। ईश्वर ने मनुष्य को अपना ही प्रतिरूप बनाकर इस पृथ्वी पर उतारा है। मनुष्य शारीरिक और मानसिक रूप से इतना सक्षम है कि एक सेकेंड में पूरी दुनिया का विनाश कर सकता है या फिर आबाद कर सकता है। परमाणु बम इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। आज तक मनुष्य ने जितने भी आविष्कार किए हैं, सभी इसी शक्ति के साक्षात प्रमाण है। आज आधुनिक जीवन में मनुष्य को जितनी सुख सुविधाएँ प्राप्त हैं, सभी उन्ही आंतरिक शक्तियों की ही देन है। मनुष्य के अंदर अनंत शक्तियाँ निहित होती हैं, बहुत कम मनुष्य ही अपनी शक्तियों को पहचान पाते हैं। जिन्होंने अपनी शक्तियों को पहचाना है, उन्होंने असंभव को भी संभव किया है।

यह शक्तियाँ वर्तमान में ही नहीं बल्कि सृष्टि के शुरुआत से ही मनुष्य को प्राप्त है। आदिमानव से आधुनिक मानव बनने तक का लंबा सफर जो मनुष्य ने तय किया है, वह उसकी अदम्य और अनंत शक्ति का ही परिणाम है। मनुष्य के अंदर इतनी शक्तियाँ स्थापित है कि हम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। हम अपने को जितना अधिक जानते हैं, उससे कहीं अधिक हमारी क्षमता होती है। मनुष्य की शक्ति इतनी अधिक है जैसा चाहे वैसा बन सकता है। अगर मनुष्य चाहे तो मानव से दानव बन सकता है, नहीं तो मानव से देवता बन सकता है। मनुष्य की इच्छा-शक्ति जिस प्रकार की होगी, वह उसी तरह का रूप धारण कर सकता है। आज हम जो भी वर्तमान में दिखाई पड़ते हैं, वह हमारी इच्छा शक्ति के कारण दृष्टिगोचर होते है।

हम अपने जीवन में जितने भी महापुरुषों को जानते हैं सभी ने अपनी आंतरिक शक्तियों का उपयोग कर जीवन का सर्वश्रेष्ठ उपयोग किया है। ऐसा क्या कारण है कि एक व्यक्ति अपने जीवन में असंभव सा कार्य कर जाता है और दूसरा व्यक्ति अपनी जीवन की छोटी सी जरूरतों को भी पूरा नहीं कर पाता। यह एक बहुत ही बड़ी विडंबना है कि मानव जाति में इतनी अधिक विषमताएं है। इसका प्रमुख कारण हर व्यक्ति-विशेष में अलग-अलग सोच होती है, जिसके कारण हर एक व्यक्ति एक दूसरे व्यक्ति से अलग होता है। एक साधारण व्यक्ति जहाँ छोटी-छोटी बातों के कारण अपने कदम पीछे हटा लेता है, वहीं दूसरी ओर ऐसे बहुत सारे लोग हैं, जो अपने दृढ़ इच्छाशक्ति और मेहनत द्वारा मनचाहा मंजिल पाते हैं।

जो व्यक्ति अपने जीवन में सफल होते हैं, वे निरंतर अपने भीतर सुधार करते रहते हैं वे अपने जीवन में कभी भी रुकते नहीं हमेशा आगे बढ़ते रहते हैं, चाहे परिस्थितियां कैसी भी रही हो। ऐसे अनेकों उदाहरण हैं, जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में रहते हुए भी अपने जीवन में कभी भी हार नहीं माना। उनके अदम्य साहस और इच्छा ने उन्हें महानतम लोगों के बीच में लाकर खड़ा कर दिया। मनुष्य की मानसिक प्रवृत्ति ही उसे अग्रिम पंक्ति में लाकर खड़ा करती है, या पिछली पंक्ति में खड़ा होने के लिए मजबूर होता है। यह आप पर निर्भर करता है कि आप जीवन में क्या चाहते हैं।

हमारे व्यक्तित्व में ऐसी बहुत सारी कमियाँ होती हैं, जिसके कारण हम हमेशा पिछड़े हुए ही रहते हैं। अगर हम कुछ बातों पर ध्यान दें और निरंतर अपने में धीरे-धीरे सुधार लाने का प्रयास करें तो हम भी अपने क्षेत्र में सफल व्यक्ति बन सकते हैं।

सफलता प्राप्त करने के लिए पहली शर्त यही होती है कि हम प्रतिदिन अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कार्य करते रहें, जब तक कि हम उसे प्राप्त नहीं कर लेते।

एक महान व्यक्ति और एक साधारण व्यक्ति में यही अंतर होता है कि एक साधारण व्यक्ति की तुलना में एक महान व्यक्ति अपने लक्ष्य को जब तक पा नहीं लेता है, तब तक हार नहीं मानता है और चैन से नहीं बैठता है।

आप हमेशा से सोचते आए हैं कि जो सफल है उनमें कुछ खास है, जो आप में नहीं है या ईश्वर ने उन्हें जन्मजात गुण दिया है, जो आप में नहीं है। पर ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। मैं कहूँगी आप में और उन सफल व्यक्तियों में कुछ भी अंतर नहीं सिर्फ एक ही अंतर है, उन्होंने अपनी आंतरिक शक्ति को पहचाना है और आप ने अपनी आंतरिक शक्ति को पहचाना ही नहीं। उनके आत्मविश्वास और सोच ने उन्हें दुनिया के शीर्ष पर लाकर खड़ा कर दिया ।

हम लोग हमेशा से यही सोचते आए हैं कि हम उनके जैसा महान नहीं बन सकते हैं, लेकिन यह बात हमेशा याद रखें कि महान व्यक्ति भी अपने सफलता से पहले आपके जैसे ही एक साधारण व्यक्ति थे पर जब उन्होंने अपने ऊपर पूरा भरोसा रखा और दृढ़ता के साथ आगे बढ़ते गए, तभी उनको अपने जीवन में सफलता मिली। जब हम अपने ऊपर भरोसा रखते हैं और अपना काम भली-भांति करते हैं, तभी हमें जीवन में सफलता प्राप्त होती है। ऐसे बहुत सारे व्यक्ति हैं, जो पहले अपने शुरुआती दिनों में में काफी असफल रहे, परंतु बाद में इन्होंने अपने मेहनत और दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण स्वयं को ऊँचाइयों पर पहुँचाया। अगर आप सफल और महान व्यक्ति के जीवन को पढ़ेंगे, तो पाएंगे कि उनका शुरुआती जीवन काफी संघर्षपूर्ण रहा। उदाहरण के लिए अब्दुल कलाम, भीमराव अंबेडकर, अब्राहम लिंकन, नेल्सन मंडेला आदि। ऐसे बहुत सारे उदाहरण हैं, जो अपने जीवन में तमाम कठिनाइयों के बावजूद जीवन में काफी सफल रहे। हम कह सकते हैं कि इनके संघर्षरत जीवन के कारण ही यह इतने सफल हो पाए। हमारे जीवन में कठिन परिस्थितियां सबक सीखा कर ही जाती हैं। कवि अज्ञेय ने ठीक ही कहा है कि

"दुःख सब को माँजता है और चाहे स्वयं सबको मुक्ति देना वह न जाने, किन्तु-जिन को माँजता है उन्हें यह सीख देता है कि सबको मुक्त रखें"

कहने का अर्थ यह है कि जीवन मे दु:ख आने से हम अधिक दृढ़ संकल्प, कर्तव्यनिष्ठ और सामर्थ्यवान बन जाते हैं। महान व्यक्ति हमारे ही जैसे दो हाथ और दो पैरों वाले होते हैं परंतु वे अपने कर्मों द्वारा ही महान बनते हैं।

कामना सिंह
भुवनेश्वर

होली का त्यौहार

होली का त्यौहार,
रंगों का त्यौहार,
खुशियों का बौछार,
उल्लास का त्यौहार,
बुराई पर अच्छाई की,
जीत का त्यौहार।
हरा , नीला और पीला
देखो, लाल गुलाबी रंगो को देखो।
चेहरे में सबके लाल गुलाल, रंग-रंगोली सबके भाल,
हाथों में रंगबिरंगी पिचकारी,
गुब्बारों की मारा-मारी, रंग बिरंगे कपडे सबके,
नाच रहें सब मस्ती में मिलके,
जैसे इंद्रधनुष धरती पर उतरा, रंगा रंग से क़तरा–क़तरा,
सबके साथ खुशियां बांटे, नफ़रत की ये दूरियां मिटे,
आओ दोस्तों इसी बहाने, दुश्मन को भी चलो मनाने,
खेले सब संग प्यार के रंग, दुनियां में फैले प्रेम तरंग,

स्नेहा पाल
दामनजोड़ी

माँ से जुदाई

दूर आसमाँ में
छुप गई हो, माँ।
मुझसे दूर क्यों
हो गई हो, माँ?
सब कुछ है,
आप नहीं हो, माँ।
बेरंग ही जिंदगी,
सब खो गया, माँ।
आपसे जुदां ऐसे
हो गई, माँ।
हर पल दर्द के
सागर में हूँ, माँ।
एक टीस मुझे
झकझोरती रहती है, माँ।
एक नज़र देखने को
बेताब हूँ, माँ।
बेचैन मन हर वक़्त
बेक़रार है,माँ।
आवाज़ कब से आपकी
सुनी नहीं, माँ।
आप तक पहुँचना
मुश्किल है, माँ।
आप माँग लो इजाज़त
ख़ुदा से, माँ।
आ जाओ मिलने
एक बार तो, माँ।
क्या मेरे जज़्बात से
अनजान हो, माँ?
इतनी अजनबी
क्यों हो गई हो, माँ?
दूरियाँ इतनी क्यों
बना गई हो, माँ?
दूर आसमाँ में
छिप गई हो, माँ।
मुझसे दूर क्यों
हो गई हो, माँ?

राधा बसु
भुवनेश्वर

अनोखी दोस्ती

एक थी मुनिया बड़ी सयानी,
रहती संग नाना और नानी,
नाना थे सरकारी अफ़सर,
रहते थे कामों में फँसकर,
नानी रहती घर में सिमटी,
नौकरों संग कामों में लिपटी,
नाना-नानी बड़े पुराने,
गौ-सेवा को धर्म थे मानें,
मुनिया में बसती थी उनकी जान,
थी मुनिया उनकी मुस्कान,
तीनों की अपनी थी एक दुनिया,
नाना-नानी और उनकी मुनिया।

धीमें–धीमें समय की चाल बढ़ी,
मुनिया चली स्कूल की गली,
घर में फुदकती मुनिया,
नयी थी जिसकी बाहर की दुनिया,
मुनिया थी प्यारी, कोमल, चंचल,
सब करते उसके परिहास जमकर,
ना मिला उसको कोई संगी साथी,
सब अपने स्वार्थ के दासी,
मुनिया रह जाती एक अकेली,
ना मिली उसे कोई सहेली।

एक दिन हो उदास नानी से बोली,
ये दुनिया तो बड़ी अलबेली,
भले को कोई समझ ना पाता,
बस अपना स्वार्थ ही साधता,
अगर रहो चुप, तो सब सही,
कुछ कहो तो हो बुरी,
बदतमीज़ का तमगा मिल जाता,
नानी थी तो बड़ी सयानी,

कहा! सुन ओ मुनिया रानी,
दुनिया की ये रीत पुरानी,
क्यों तू इस दुनिया की सोचे,
आ दूँ, तुझे एक सहेली।

नानी ले गयी उसे गौशाल,
थमा दिए गैया के गाल,
मुनिया थी बड़ी हैरान,
गैया ने भी देखा उसको,
मुनिया करती गैया की सेवा,
बिन स्वार्थ बिन कोई क्लेश ,
एक दिन मुनिया ने देखा,
गैया ने दिया उसे एक तोहफ़ा,
मुनिया रह गई हैरान,
आयी उसके चेहरे पे दिव्य मुस्कान,
ले आयी बछिया संग अपने,
दी उसे अलग पहचान और नाम,
दोनों संग मस्ती में रहते,
खेलते – खाते और कुलाँचे भरते
दोनो की तो खूब थी यारी,
आँखों – आँखों से बातें करती।
एक दिन सब बड़े परेशान,
खो गई वो बछिया 'मुनिया की जान',
मुनिया की मुस्कान गई,
मुनिया तो बस सुबक पड़ी,

समय की फिर चाल बढ़ी,
एक दिन तपती दोपहर थी बड़ी,
एक गैया थी दरवाजे पर खड़ी,
जड़वत टुक – टुक ताके,
मुनिया को खड़ी,
मुनिया थी बड़ी हैरान,
फिर मुनिया ने डाँट लगाई,
चली जा वहाँ, जहाँ से है आई,
गैया फिर भी मौन खड़ी,
दूसरे दिन भी वही खड़ी रही,
फिर टुकर – टुकर मुनिया को ताके,
आँखों से कुछ कहना चाहे,

मुनिया एक पल ठिठक गई,
फिर खुशी में झूम वह उछल पड़ी,
दौड़ के लगाया गैया को गले,
दोनों के आँखों से नीर बहे,
बेदम हो कर फूली ना समाई,
मिल गई उसे उसकी गैया,
सखी जो थी उसके मन को भाई,
दोनो मिल के हुए निहाल,
यह है एक सच्ची कहानी,
मुनिया और उसकी
"अनोखी दोस्ती" पुरानी॥

प्रियंका पाल
अनुगुळ

ଅଯୋଧାରେ ଶ୍ରୀରାମ ମନ୍ଦିରର ଉଦ୍‌ଘାଟନ

ଭାରତ ଯଦିଓ ଏକ ପୁରାତନ ରାଷ୍ଟ୍ର କିନ୍ତୁ ଅନେକ ବର୍ଷ ଧରି ବାରମ୍ବାର ବିଦେଶୀ ଶତ୍ରୁମାନଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ଆକ୍ରମଣର ଶିକାର ହୋଇଛି ଶହଶହ ବର୍ଷ ପାଇଁ। ଶକ, ହୁଣ, ତାତାର, ଗ୍ରୀକ୍, ପଠାଣ, ମୋଗଲ, ଇଂରେଜ, ଫରାସୀ, ଡଚ୍ ଏମିତି ଅନେକ ଜାତି ଭାରତକୁ ବାରମ୍ବାର ଆକ୍ରମଣ କରି ଭାରତକୁ ପରାଧୀନ କରି ରଖିବା ସହିତ ଗୋଲାମ କରି ରଖିଛନ୍ତି। କିନ୍ତୁ ଏମାନଙ୍କ ଭିତରେ ସବୁଠାରୁ ବର୍ବର ଭାବରେ ଆସିଛନ୍ତି ମୋଗଲ। ସେମାନଙ୍କର ଶାସନ ପ୍ରାୟ ସାତ ଶହ ବର୍ଷ ଧରି ତିଷ୍ଠି ରହିଥିଲା ଭାରତରେ। ସେମାନେ ଆସିବା ପରେପରେ ଧାର୍ମିକ ଉନ୍ମାଦନାର ଯାବତୀୟ କାଣ୍ଡ ଭିଆଇଛନ୍ତି। ଗୁଜୁରାଟର ପ୍ରସିଦ୍ଧ ଜ୍ୟୋତିର୍ଲିଙ୍ଗ " ସୋମନାଥ ମନ୍ଦିର" କୁ ସୁଲତାନ ମାମୁଦ ସତର ଥର ଆକ୍ରମଣ କରି ଯାବତୀୟ ଧନ ଦୌଲତ ବୋହିନେଇଯାଇଛି ଆରବକୁ। ମଥୁରାରେ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ଜନ୍ମଭୂମି ମନ୍ଦିର, ବାରାଣାସୀର ପ୍ରସିଦ୍ଧ କାଶୀ ବିଶ୍ୱନାଥ ମନ୍ଦିର, ଅଯୋଧାର ରାମଲାଲଙ୍କର ଜନ୍ମ ସ୍ଥାନ ମନ୍ଦିର, ଭୋପାଳର ମାତା ସରସ୍ୱତୀଙ୍କର ଭୋଜରାଜ ମନ୍ଦିର.....। ଏମିତି କେତେ ଯେ କେତେ, ତାର ବିବରଣୀ ସବୁ ଇତିହାସ ପୃଷ୍ଠାରେ କିମ୍ବଦନ୍ତୀ ହୋଇ ସମାଜର ଜନମାନସରେ ଶହଶହ ବର୍ଷ ଧରି ଆଜି ବି ଉଜାଗର ଅଛି।

ଭାରତୀୟ ହିନ୍ଦୁ ସଭ୍ୟତାର ଶ୍ରଦ୍ଧାକେନ୍ଦ୍ର ଉପରେ ପ୍ରଚଣ୍ଡ ଆକ୍ରମଣ କରି ଏ ଦେଶର ଅସ୍ମିତାରେ ଆସ୍ଥାହୀନତାର କଳଙ୍କ ଲଗାଇ ଦେବାର ଏ ଥିଲା ଏକ ହୀନ ପ୍ରୟାସ। ଓଡ଼ିଆଙ୍କର ଆରାଧ୍ୟ ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥଙ୍କୁ ମଧ୍ୟ ଡଙ୍ଗାରେ ଲୁଚିଲୁଚି ଯାଇ ଚିଲିକା ଓ ସୁବର୍ଣ୍ଣପୁର ଇତ୍ୟାଦିରେ ରହିବାକୁ ପଡିଛି।

ସ୍ୱାଧୀନ ଭାରତର ପ୍ରଥମ ଗୃହ ମନ୍ତ୍ରୀ ସର୍ଦ୍ଦାର ବଲ୍ଲଭଭାଇ ପଟେଲଙ୍କର ନେତୃତ୍ୱରେ ସୋମନାଥ ମନ୍ଦିରର ପୁନରୁଦ୍ଧାର ହେବାପରେ ଭାରତର ପ୍ରଥମ ରାଷ୍ଟ୍ରପତି ଡଃ ରାଜେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରସାଦ ମେ ୧୧ ତାରିଖ 1951 ମସିହାରେ ସୋମନାଥ ମନ୍ଦିରର ଉଦ୍‌ଘାଟନ କରି ଘୋଷଣା କରିଥିଲେ ଯେ ଆଜି ଆମେ ଶହଶହ ବର୍ଷର କଳଙ୍କକୁ ପୋଛି ଦେଇ ଭବ୍ୟ ସୋମନାଥ ମନ୍ଦିରର ନିର୍ମାଣ କରି ଦେଶର କୋଟିକୋଟି ହିନ୍ଦୁ ମାନଙ୍କୁ ସେମାନଙ୍କର ଶ୍ରଦ୍ଧାକେନ୍ଦ୍ର ଓ ଆସ୍ଥା ଫେରେଇ ଦେଇଛୁ।

ବାବର୍‌ଙ୍କ ନେତୃତ୍ୱରେ ଅଯୋଧାର ମନ୍ଦିରକୁ ଭାଙ୍ଗିଦେଇ ମସଜିଦ ଛିଡା ହୋଇଥିଲା। ସେବେଠାରୁ ଲଢେଇ ଚାଲିଥିଲା ନିରନ୍ତର। ଏ ଲଢେଇକୁ ପାଞ୍ଚଶହ ବର୍ଷ ପୂରଣ ହୋଇଗଲା। ଶେଷରେ ସୁପ୍ରିମକୋର୍ଟଙ୍କ ନିର୍ଦ୍ଦେଶରେ ଫେରି ଆସିଲା ରାମ ଜନ୍ମଭୂମି ବାବ୍ରୀ ମସଜିଦ ହିନ୍ଦୁମାନଙ୍କ ମାଲିକାନାକୁ। ସାରା ଭାରତରୁ ହିନ୍ଦୁମାନଙ୍କ ଦାନ ଦକ୍ଷିଣାର ରାଶିରାଶି ଅର୍ଥ ଓ ବସ୍ତୁ ଛୁଟି ଆସିଲା। ଭବ୍ୟ ଓ ଦିବ୍ୟ ମନ୍ଦିର ଜନ୍ମସ୍ଥାନରେ ଛିଡା ହୋଇଗଲା। ସରଜୁଘାଟ ଠାରୁ, ରାସ୍ତା, ଛକ, ରେଳ ଷ୍ଟେସନ, Airport, ସାଧାରଣ ଲୋକଙ୍କ ଘର ସବୁ ଯେମିତି ଭବ୍ୟ ହୋଇଗଲା। ଅଯୋଧା ତ୍ରେତା ଯୁଗରେ ଯେମିତି ପରିଣତ ହୋଇସାରିଥିଲା। ଶୁଭ ଭିତ୍ତିପ୍ରସ୍ତର ସ୍ଥାପନ ଦିନଠାରୁ ଦୁଇବର୍ଷ ଭିତରେ ଭବ୍ୟ ରାମ ମନ୍ଦିର ଉଠି ଛିଡ଼ା ହୋଇଗଲା। ଏଥର ଥିଲା ଭକ୍ତାର୍ପଣର ସମୟ। ସାଧୁ ସନ୍ଥ ମାନେ ଦିନ ଧାର୍ଯ୍ୟ କଲେ। ସେ ପବିତ୍ର ଦିନ ଥିଲା ଜାନୁୟାରୀ ୨୨। ଭାରତର ସବୁ ମତ, ପନ୍ଥାର ସାଧୁ ସନ୍ଥ, ସିନେମା ଓ ସଙ୍ଗୀତ ଜଗତର ସବୁ ହସ୍ତୀ, କଳା ଜଗତର ସମସ୍ତ ରଥୀ, ମହାରଥୀ, ଉଦ୍ୟୋଗ ଜଗତର ସମସ୍ତ ବିଶାଳ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ସମସ୍ତଙ୍କ ଗହଣରେ ଭାରତର ଯଶସ୍ୱୀ ଓ ଲୋକପ୍ରିୟ ପ୍ରଧାନ ମନ୍ତ୍ରୀ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ନରେନ୍ଦ୍ର ମୋଦି ରାଷ୍ଟ୍ର ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ ସମର୍ପଣ କରିଥିଲେ ଏହି ଭବ୍ୟ ମନ୍ଦିର। ଅନେକ ମହାନୁଭବ ଏ ଦୃଶ୍ୟ ଦେଖୁଥାନ୍ତି। ତାହାରି ଭିତରେ ପାଞ୍ଚ ଶହ ବର୍ଷର କଳଙ୍କ ଧୂଳିସାତ ହୋଇ ସେହି ସ୍ଥାନରେ ହିଁ ଶ୍ରୀରାମଙ୍କର ବିଶାଳ ଭବ୍ୟ ମନ୍ଦିର ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ହୋଇଗଲା।

ଏ ସନାତନ ହିନ୍ଦୁ ଆସ୍ଥାର ବିଜୟ ବୈଜୟନ୍ତୀ ପୁଣିଥରେ ଅଯୋଧାର ଆକାଶକୁ ମୁଖରିତ କରି ଦେଇଥିଲା। ଇତିହାସ ପୁଣି ଥରେ ଲେଖି ହୋଇଗଲା

ଶୁଭଶ୍ରୀ ସାହୁ

ଭୁବନେଶ୍ୱର

ପରିବାର

ଦୁଇ ଦିନ ତଳେ ଭାରି ଧୁମଧାମରେ ଝିଅର ବାହାଘର ସରିଗଲା । ଝିଅ ଶାଶୁଘରକୁ ବିଦା ହୋଇ ଚାଲିଗଲା। ଗତ କାଲି ସବୁ ବନ୍ଧୁବାନ୍ଧବ ଜଣେ ଜଣେ ହୋଇ ବିଦାୟ ନେଇ ନିଜ ଘରକୁ ଚାଲିଗଲେ। ଆଠ ଦଶ ଦିନ ହେବ ଘରେ ଯେଉଁ ବାହାଘର ପାଇଁ ଗହଳି ଚହଳି ଲାଗିଥିଲା, ଆଜି ସବୁ ସରିଲା। ଘର ପୁରା ଖାଲି ଖାଲି ଲାଗୁଛି। ଝିଅ କଥା ଭାବି ଭାବି ତାନିର ଆଖିରୁ ଝରଝର ଲୁହ ବାହାରି ଯାଉଥିଲା।

ସ୍ୱାମୀ ଅଫିସ ଗଲାପରେ ଚା କପ୍ ଟେ ଧରି ବାଲକୋନୀରେ ଆସି ବସିଲା ତାନି। ଆଜି ତାକୁ ପୂର୍ବ କଥା ସବୁ ଗୋଟି ଗୋଟି ହୋଇ ମାନେ ପଡି ଯାଉଥିଲା।

କାଲି ପରି ଲାଗୁଥିଲା, ସେ ନିଜେ ବିବାହ କରି ଏହି ଘରକୁ ଆସିଥିଲା। ଦୁଇ ଭଉଣୀ ଓ ଗୋଟିଏ ଭାଇର ପରିବାର ତାର। ଶାଶୁଘର କିନ୍ତୁ ତିନି ଭାଇ ଏବଂ ଚାରି ଭଉଣୀଙ୍କୁ ନେଇ ବଡ଼ ପରିବାର। ଘରେ ସବୁବେଳେ ଗହଳି। ସ୍ୱାମୀ ଓଡ଼ିଶାରେ ଚାକିରି କରୁଥିବାରୁ ଶାଶୁ,ଶ୍ୱଶୁର ପ୍ରାୟ ତା ପାଖରେ ହିଁ ରହିବାକୁ ପସନ୍ଦ କରୁଥିଲେ। ଅନ୍ୟ ଦୁଇ ଦେଢ଼ଶୁରଙ୍କର ଓଡ଼ିଶା ବାହାରେ ଚାକିରି। ତେଣୁ ମଝି ମଝିରେ ସେମାନଙ୍କ ପାଖକୁ ମାସେ ଦୁଇ ମାସ ପାଇଁ ହିଁ ଯାଆନ୍ତି ଶାଶୁ ଶ୍ୱଶୁର। ଯେହେତୁ ଶାଶୁ ଶ୍ୱଶୁର ପାଖରେ ରହୁଥିଲେ, ସେମାନଙ୍କ ଘରକୁ ସବୁବେଳେ ଦେଢ଼ଶୁର ଏବଂ ନଣନ୍ଦମାନଙ୍କର ଯିବା ଆସିବା ଲାଗି ରହିଥିଲା।

ଶାଶୁ ଶ୍ୱଶୁର ଅତ୍ୟନ୍ତ ସ୍ନେହୀ ଏବଂ ଭଲ ହେଲେ ମଧ୍ୟ ବେଳେ ବେଳେ ତାନିକୁ ଭାରି ଅଣନିଃଶ୍ୱାସୀ ଲାଗେ। ସାଙ୍ଗସାଥୀଙ୍କର ପ୍ରତି ଛୁଟିରେ ନିଜ ପିଲାଙ୍କୁ ନେଇ ବିଭିନ୍ନ ସ୍ଥାନକୁ ଯାଇ ବୁଲିବା, ନିଜ ଇଚ୍ଛା ଅନୁସାରେ ଜୀବନଯାପନ କରିବା ଦେଖି ତାକୁ ଲାଗେ ସେ ମଧ୍ୟ ସେପରି ବିନା ଚିନ୍ତା ଓ ବନ୍ଧନରେ ସେପରି ଜୀବନଯାପନ କରନ୍ତା କାରଣ ପ୍ରାୟ ପିଲାଙ୍କର ପ୍ରତି ଛୁଟି ସମୟରେ ତାର ନଣନ୍ଦ କିମ୍ବା ଦେଢ଼ଶୁରମାନେ ନିଜ ପିଲାଛୁଆଙ୍କୁ ଧରି ଘରକୁ ବୁଲି ଆସିଯାଆନ୍ତି । ତେଣୁ ନିଜର ଯେତେ ଇଚ୍ଛା ଥିଲେ ମଧ୍ୟ ବାହାରକୁ ଯାଇ ବୁଲି ଆସିବାକୁ ସିଏ ଯାଇ ପାରେନି । ପିଲାମାନେ ତ ନଣନ୍ଦ ଓ ଦେଢ଼ଶୁରଙ୍କ ପିଲାଙ୍କ ସହ ମିଶି ଖୁସିରେ ଖେଳାବୁଲା କରି ନିଜେ ବାହାରକୁ ବୁଲି ନ ଯିବା କଥା ଭୁଲି ଯାଆନ୍ତି। ସ୍ୱାମୀ ମଧ୍ୟ ନିଜ ଭାଇ ଭଉଣୀଙ୍କୁ ଦେଖି ଖୁସିରେ ଉଲ୍ଲସିତ ହୋଇ ଉଠନ୍ତି କିନ୍ତୁ ତାନି ବାହାରେ କିଛି କହି ନ ପାରିଲେ ମଧ୍ୟ ମନେ ମନେ ଭାରି ଚିଡ଼ିଯାଏ। ଅନ୍ୟ ସମସ୍ତଙ୍କର ଖୁସି ଦେଖି ନିଜ ମନକୁ ବୁଝାଇ ରହିଲେ ମଧ୍ୟ ବେଳେ ବେଳେ କାହାକୁ କିଛି କହି ନ ପାରି ସ୍ୱାମୀଙ୍କ ଉପରେ ନିଜର ସବୁ ରାଗ ସୁଝାଇ ଦିଏ। ତାକୁ ଲାଗେ ସିଏ ଯଦି ଗୋଟେ ଛୋଟ ପରିବାରରେ ବିବାହ କରିଥାନ୍ତା, ତା ଉପରେ ଏତେ ଦାୟିତ୍ୱ ପଡି ନଥାନ୍ତା। ସିଏ ମଧ୍ୟ ନିଜ ହିସାବରେ ନିଜ ଜୀବନଯାପନ କରି ପାରନ୍ତା। ଛୋଟ ଛୋଟ କଥାରେ ତାକୁ ଏତେ ଏଡ଼ଜଷ୍ଟ କରିବାକୁ ପଡ଼ିନଥାନ୍ତା ।

କିନ୍ତୁ ଶାଶୁ ଶ୍ୱଶୁରଙ୍କ ଅନାବିଳ ସ୍ନେହ ଏବଂ ସ୍ୱାମୀଙ୍କ ଗଭୀର ପ୍ରେମ ଦେଖି ସେହି ରାଗ ଓ ଅବଶୋଷ ମଧ୍ୟ ତା ମନରେ ବେଶୀ ସମୟ ରହି ପାରେନି।

ସମୟକ୍ରମେ ପୁଅ, ଝିଅ ଦୁହେଁ ବଡ଼ ହୋଇ ବାହାରକୁ ପଢିବାକୁ ଚାଲିଗଲେ। ଶାଶୁ ଶ୍ୱଶୁର ମଧ୍ୟ ଅଳ୍ପଦିନ ବ୍ୟବଧାନରେ ଆରପାରିକୁ ଚାଲିଗଲେ। ଘର ପୁରା ଖାଲି ହୋଇଗଲା। ନଣନ୍ଦମାନଙ୍କର ଘରକୁ ବୁଲି ଆସିବା ମଧ୍ୟ ଧୀରେ ଧୀରେ କମିଗଲା।

ଝିଅ ଚାକିରି କଲାପରେ ଯେତେବେଳେ ନିଜ ପସନ୍ଦର ପୁଅକୁ ବିବାହ ପାଇଁ ଠିକ୍ କରିଛି ବୋଲି କହିଲା। ତାନି ଭାରି ବ୍ୟସ୍ତ ହୋଇଗଲା। କିନ୍ତୁ ପୁଅ ଏବଂ ତାର ପରିବାରକୁ ମିଶିବା ପରେ ତା ମନରୁ ସବୁ ଡର ଦୂରେଇ ଗଲା। ରୂପ, ଗୁଣ ଯୋଗ୍ୟତାରେ ପୁଅଟି ନିଜ ଝିଅ ପାଇଁ ସବୁ ଦୃଷ୍ଟିରୁ ଯୋଗ୍ୟ ଥିଲା। ତେଣୁ ଦୁଇ ପରିବାର ମିଶି ସେମାନଙ୍କ ବିବାହ ଠିକ କରିଦେଲେ।

କିନ୍ତୁ ବାହାଘରର ଠିକ୍ ଦଶଦିନ ଆଗରୁ ବାଥରୁମ୍ ରେ ଗୋଡ଼ ଖସି ପଡି ତାନିର ଡାହାଣ ହାତଟା ଭାଙ୍ଗିଗଲା। ହାତରେ ମାସେ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପ୍ଲାଷ୍ଟର ବାନ୍ଧି ରଖିବାକୁ ପଡିବ ବୋଲି ଡାକ୍ତର କହିଲେ। ଆଗକୁ ଝିଅ ବାହାଘର କିପରି ବାହାଘର କାମ ସବୁ ହେବ ଭାବି କାନ୍ଦି କାନ୍ଦି ତାକୁ ଆଉ ରାତିରେ ନିଦ ହେଲାନି। ସ୍ୱାମୀ, ପୁଅ, ଝିଅ, ସବୁ ଯେତେ ବୁଝାଇଲେ ମଧ୍ୟ ସେ ବୁଝୁ ନ ଥିଲା। ବାହାଘର କାର୍ଡ ବଣ୍ଟା ମଧ୍ୟ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଯାଇଥିଲା। ତେଣୁ ଆଉ ବାହାଘରକୁ କିଛି ଦିନ ଆଗକୁ ଗଡ଼େଇବାର ପ୍ରଶ୍ନ ହିଁ ନ ଥିଲା। କିପରି ସବୁ କାମ ହେବ ଭାବି ତାକୁ ଚାରିଆଡ ଅନ୍ଧାର ଦିଶୁଥିଲା।

କିନ୍ତୁ ହାତ ଭାଙ୍ଗିବାର ଠିକ୍ ତିନିଦିନ ପରେ ଦୁଇ ଯାଆ ଏବଂ ନଣନ୍ଦମାନେ ଆସି ହଠାତ ସକାଳୁ ସକାଳୁ ଘରେ ପହଞ୍ଚିଗଲେ। ସପ୍ତାହଟେ ଆଗରୁ ସେମାନେ ଆସିବା ଦେଖି ତାନି ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ହେଇଗଲା। କିନ୍ତୁ ସ୍ୱାମୀଙ୍କର ମୁରୁକି ହସ ଦେଖି ସେ ବୁଝି ପାରିଲା ଯେ ତା ଛଡା ଘରେ ସମସ୍ତେ ସେମାନଙ୍କ ଆସିବା କଥା ଜାଣିଛନ୍ତି। ବଡ଼ ନଣନ୍ଦ ପାଖକୁ ଆସି ତାର ମୁଣ୍ଡକୁ ଆଉଁସି ଦେଇ କହିଲେ "ତୁ କାହିଁକି ବ୍ୟସ୍ତ ହେଉଛୁ? ଆମେ ସବୁ ଥାଉ ଥାଉ ତୋ ହାତ ଭାଙ୍ଗିଗଲା ବୋଲି କଣ ଆମ ଲୋନିର ଆଉ କେହି ନାହାନ୍ତି କି? ତା ବାହାଘରରେ କିଛି ଅସୁବିଧା ହେବ ନାହିଁ। ସବୁ ଭଲରେ ହେଇଯିବ। ତୁ ଖାଲି ଆରାମରେ ବସ।" ମୁଖରୀ ସାନ ନଣନ୍ଦ ମଧ ଦୁଇ ହାତରେ ତାକୁ କୁଣ୍ଢାଇ ପକାଇ କହିଲେ, "ହ' ମ' ଭାଉଜ, ତମେ ଏବେ ଖାଲି ବସି ବସି ଆମକୁ ଅର୍ଡର ଦିଅ, ଆଉ ଆମେ ସବୁ କାମ କରିଦେବୁ।"

ତା ପରଦିନ ତାନିର ଚାକିରିଆ ଭଉଣୀ ଏବଂ ଭାଉଜ ମଧ ପୁନାରୁ ଆସି ପହଞ୍ଚିଗଲେ। ତାନି ବୁଝିପାରୁଥିଲା ତାର ହାତ ଭଙ୍ଗା କଥା ଶୁଣି ସମସ୍ତେ ଆଗରୁ ଆସି ପହଞ୍ଚି ଗଲେ। ସେ ଖାଲି ବସି ବସି ଦେଖୁଥିଲା। ତାର ବାପଘର ଏବଂ ଶାଶୁଘରର ସମସ୍ତେ ମିଶି କିପରି ସ୍ୱାମୀଙ୍କ ସହ ମିଶି କାର୍ଡ ବାଣ୍ଟିବାଠାରୁ ଆରମ୍ଭ କରି, ଝିଅ ଶାଶୁ ଘରକୁ ପଠାଯିବା, ଲୁଗାପଟା, ମିଠା ଆଦିର ପ୍ୟାକିଂ କରିବା ସହ ବାହାଘରର ପ୍ରତ୍ୟେକ କାମର ଦାୟିତ୍ୱ ନିଜ ନିଜ ଭିତରେ ବାଣ୍ଟି କାମରେ ବ୍ୟସ୍ତ ହେଇଗଲେ।

ବହୁତ ଭଲରେ ଝିଅର ବାହାଘର ସରିଗଲା। ଝିଅର ଶାଶୁଘର ଲୋକ ମଧ ଖୁସିରେ ଝିଅକୁ ଧରି ଗଲାବେଳେ କିଛି ଚିନ୍ତା ନ କରିବାକୁ କହିଲେ। ଝିଅ ବିଦା ହେବାର ପରଦିନ ଜଣେ ଜଣେ ହୋଇ ସବୁ ବନ୍ଧୁବାନ୍ଧବ ବିଦା ହୋଇ ଚାଲିଗଲେ।

ବଡ ନଣନ୍ଦ ବିଦାୟ ନେଇ ଗଲାବେଳେ ଯେତେବେଳେ ତାକୁ ତାଗିଦ କରି କହିଲେ "ଭାଉଜ ପିଲାମାନେ ବାହାରକୁ ଚାଲିଗଲେ ଏବଂ ଶାଶୁ ଶ୍ୱଶୁର ଆଉ ନାହାନ୍ତି ବୋଲି ଆଉ ଆମ ଭାଇର ଖାଇବା ପିଇବାରେ ଅବହେଳା କରିବ ନାହିଁ । ପିଲାବେଳୁ ତାର ଖାଇବାରେ ଭାରି ସଉକ। ସବୁବେଳେ ଏପରି କଥା ଶୁଣି ମନେ ମନେ ଚିଡ଼ି ଯାଉଥିଲା ତାନି, କିନ୍ତୁ ଏଥର ସେ ଏହି କଥା ପଛରେ ଥିବା ଭାଇ ପ୍ରତି ବଡ଼ ଭଉଣୀର ସ୍ନେହକୁ ଭଲ ଭାବରେ ବୁଝିପାରୁଥିଲା। ଭାଇର ଗୋଟେ ଫୋନ୍ କଲ୍ ରେ ନିଜର ସବୁ କାମକୁ ପଛରେ ପକାଇ ଆସି ଭାଇ ଭାଉଜର ଅସୁବିଧା ସମୟରେ ପ୍ରାଚୀର ପରି ଛିଡା ହେଇ ଯେପରି ବାହାଘରର ସବୁ ଦାୟିତ୍ୱ ତୁଲାଇ ଦେଲେ ସେଥିପାଇଁ କୃତଜ୍ଞତାରେ ଭରିଯାଉଥିଲା ତାର ମନ ।

ବିବାହ କରି ଆସିବା ସମୟରେ ତା'ର ମା ତାକୁ ବୁଝାଇ କହିଥିଲେ "ବଡ଼ ପରିବାରରେ ବିବାହ କରୁଛୁ ବୋଲି ବ୍ୟସ୍ତ ହୁଅନା। ଯଦି ସେମାନଙ୍କୁ ବାନ୍ଧି ରଖିବୁ ତୋର ସୁବିଧା, ଅସୁବିଧା ସମୟରେ ସେମାନେ ହିଁ ତୋର ସାହାରା ହୋଇ ଆଗ ଆସି ଛିଡା ହେବେ।" ଆଜି ସେ ମାଆ କହିଥିବା କଥାର ସତ୍ୟତା ମର୍ମେ ମର୍ମେ ଅନୁଭବ କରିପାରୁଥିଲା।

ତନୁଶ୍ରୀ ଦାଶ
ଦାମନଯୋଡ଼ି

ଗଣତନ୍ତ୍ର ଦିବସ

ଇତିହାସ ପୃଷ୍ଠା ଉନ୍ମୋଚନ କଲେ ଜଣାଯାଏ ଯେ ବିଭିନ୍ନ ରାଷ୍ଟ୍ରରେ ଭିନ୍ନ ଭିନ୍ନ ଶାସନ ବ୍ୟବସ୍ଥା ପରିଚାଳିତ ହେଉଛି। ବର୍ତ୍ତମାନ ମଧ ବିଭିନ୍ନ ଦେଶରେ ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରକାର ଶାସନ ପ୍ରଚଳିତ। ସମୟ ସ୍ରୋତରେ ଶାସନ ପଦ୍ଧତିର ପରିବର୍ତ୍ତନ ଘଟୁଛି। ବିବିଧ ଶାସନ ବ୍ୟବସ୍ଥା ମଧରେ ଗଣତନ୍ତ୍ର ଶାସନ ଲୋକପ୍ରିୟତା ହାସଲ କରିବାରେ ଲକ୍ଷ୍ୟ କରାଯାଉଛି। ଏହି ବ୍ୟବସ୍ଥା ଅନୁଯାୟୀ ଜନସାଧାରଣଙ୍କଠାରେ ପ୍ରକୃତ ଶାସନ ନ୍ୟସ୍ତ ଥାଏ। ଆମେରିକାର ପୂର୍ବତନ ରାଷ୍ଟ୍ରପତି ଆବ୍ରାହମ ଲିଙ୍କନଙ୍କ ମତରେ ଗଣତନ୍ତ୍ର ହେଉଛି ଲୋକମାନଙ୍କର, ଲୋକମାନଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ଓ ଲୋକମାନଙ୍କ ମଙ୍ଗଳ ନିମନ୍ତେ ଉଦ୍ଦିଷ୍ଟ ଶାସନ।

ଗଣତନ୍ତ୍ର ଶାସନ ମୁଖ୍ୟତଃ ଦୁଇ ଶ୍ରେଣୀର- ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ଗଣତନ୍ତ୍ର ଓ ପରୋକ୍ଷ ଗଣତନ୍ତ୍ର। ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ଗଣତନ୍ତ୍ର ଶାସନରେ ନାଗରିକମାନେ ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ଭାବରେ ଶାସନ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଅଂଶଗ୍ରହଣ କରନ୍ତି। କେତେକ ସ୍ଥଳରେ ଗଣତନ୍ତ୍ର

ଶାସନରେ ରାଷ୍ଟ୍ରପତି ମୁଖ୍ୟ ଅଂଶଗ୍ରହଣ କରନ୍ତି। ସେ ମଧ୍ୟ ବିଶେଷ କ୍ଷମତାରେ ଅଧିକାରୀ। ଯୁକ୍ତରାଷ୍ଟ୍ରରେ ଏଭଳି ଶାସନ ବ୍ୟବସ୍ଥା ଚାଲିଛି। ଭରତଭଳି କେତେକ ରାଷ୍ଟ୍ରରେ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ଶାସନ ପରିଚାଳନାରେ ମୁଖ୍ୟ ଭୂମିକା ଗ୍ରହଣ କରନ୍ତି। ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ଓ ରାଷ୍ଟ୍ରପତିଙ୍କ ପ୍ରାଧାନ୍ୟ ଦୃଷ୍ଟିରୁ ପରୋକ୍ଷ ଗଣତନ୍ତ୍ରକୁ ଦୁଇ ଭାଗରେ ବିଭକ୍ତ କରାଯାଇପାରେ। ସାବାଳକ ଭୋଟ୍ ପ୍ରଥା ଅନୁସାରେ ଏକୋଇଶ ବର୍ଷ ବୟସ ବା ତହିଁରୁ ଊର୍ଦ୍ଧ୍ୱ ବୟସ୍କ ନାଗରିକମାନେ ସାଧାରଣତଃ ନିର୍ବାଚନ ସମୟରେ ମତଦାନ ଅଧିକାର ପାଇଥାନ୍ତି। କେତେକ ଦେଶରେ ଏହି ବୟସ ସୀମା ଏକୋଇଶରୁ ଅଠରକୁ କମେଇ ଦେଇଛନ୍ତି। ଭାରତରେ ଉକ୍ତ ବୟସ ସୀମାକୁ ୨୧ ବର୍ଷରୁ ୧୮ ବର୍ଷକୁ ହ୍ରାସ କରାଯାଇଛି। ନାଗରିକମାନେ ସେମାନଙ୍କର ପ୍ରତିନିଧିକୁ ନିର୍ବାଚିତ କରନ୍ତି। ସଂଖ୍ୟା ଗରିଷ୍ଠତା ଲାଭ କରିଥିବା ରାଜନୈତିକ ଦଳ ସରକାର ଗଠନ କରନ୍ତି। କେତେକ ରାଷ୍ଟ୍ରରେ ଦୁଇଟି ରାଜନୈତିକ ଦଳ ଥିବା ସ୍ଥଳେ ଅନ୍ୟ କେତେକରେ ବହୁ ଦଳ ନିର୍ବାଚନରେ ଭାଗ ନିଅନ୍ତି। ଅନେକ ରାଜନୈତିକ ଦଳ ଥିବା କୌଣସି ରାଷ୍ଟ୍ରରେ ଯଦି କୌଣସି ଏକ ଦଳ ସଂଖ୍ୟା ଗରିଷ୍ଠତା ହାସଲ କରିବାରେ ଅସମର୍ଥ ହୁଏ, ସେପରି କ୍ଷେତ୍ରରେ କେତେକ ଦଳ ଏକତ୍ର ହୋଇ ମିଳିତ ସରକାର ଗଠନ କରିପାରନ୍ତି। ଗଣତନ୍ତ୍ର ଶାସନ ବ୍ୟବସ୍ଥାରେ ସାର୍ବଭୌମ କ୍ଷମତା ଜନସାଧାରଣଙ୍କ ହସ୍ତରେ ନ୍ୟସ୍ତ ଥାଏ। ସେମାନଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ନିର୍ବାଚନ ପ୍ରତିନିଧି ଶାସନ ଦାୟିତ୍ୱ ଗ୍ରହଣ କରନ୍ତି। ଏହାଦ୍ୱାରା ଶାସନ ଜନିତ ଅସନ୍ତୋଷର ମାତ୍ରା ହ୍ରାସପ୍ରାପ୍ତ ହୁଏ। ପ୍ରତିନିଧିମାନେ ଉତ୍ତମରୂପେ ଶାସନକୁ ପରିଚାଳନା ନ କଲେ ଜନସାଧାରଣଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ସମାଲୋଚିତ ହେବେ ଏବଂ ପରବର୍ତ୍ତୀ ନିର୍ବାଚନରେ ବିଜୟ ଲାଭର ଆଶା କ୍ଷୀଣ ହେବ। ଜାତି ଧର୍ମ ଓ ବର୍ଣ୍ଣ ନିର୍ବିଶେଷରେ ସମସ୍ତ ନାଗରିକ ସରକାର ଗଠନରେ ସମାନ ଅଂଶ ଗ୍ରହଣ କରିବାର ସୁଯୋଗ ପାଆନ୍ତି। କୌଣସି ଶ୍ରେଣୀ ବା ସମ୍ପ୍ରଦାୟର ବ୍ୟକ୍ତି ଅବହେଳିତ ହୁଅନ୍ତି ନାହିଁ। ଗଣତନ୍ତ୍ର ଶାସନ ବ୍ୟବସ୍ଥାନୁସାରେ ଗଠିତ ଲୋକ ପ୍ରତିନିଧି ମୂଳକ ସରକାର ସର୍ବସାଧରଣର ହିତ ଦୃଷ୍ଟିରୁ ସମସ୍ତ ପ୍ରକାର କାର୍ଯ୍ୟ ସୂଚାରୁରୂପେ ସମ୍ପାଦନ କରନ୍ତି। ଏଭଳି ଶାସନ ବ୍ୟବସ୍ଥାରେ ଜନସାଧାରଣଙ୍କ ମତକୁ ବା ଇଚ୍ଛାକୁ ଈଶ୍ୱରଙ୍କ ବାଣୀ ରୂପେ ଗ୍ରହଣ କରାଯାଇଥାଏ। ଗଣତନ୍ତ୍ର ହେଉଛି ଆଇନର ଶାସନ। ଆଇନ ସମ୍ମୁଖରେ ସମସ୍ତେ ସମାନ। ଏହି ଗଣତନ୍ତ୍ର ଶାସନରେ ଚରିତ୍ରବାନ ବ୍ୟକ୍ତିମାନେ ନିର୍ବାଚିତ ହୋଇ ଶାସନ ଦାୟିତ୍ୱ ବହନ କରିବା ବିଧିସଙ୍ଗତ ଅଟେ। ନାଗରିକମାନେ ଉପଯୁକ୍ତ ବ୍ୟକ୍ତି ନିର୍ବାଚନ କରିପାରୁ ନାହାନ୍ତି। ଭୟ ଅଥବା ଅର୍ଥ ପ୍ରଲୋଭନର ଶିକାର ହୋଇ ଚରିତ୍ରହୀନ ଅସାଧୁ, ଅଭିଯୁକ୍ତ ଓ ଦୁର୍ନୀତିଗ୍ରସ୍ତ ବ୍ୟକ୍ତିମାନଙ୍କୁ ନିର୍ବାଚିତ କରି ଶାସନ ବ୍ୟବସ୍ଥାକୁ କଳଙ୍କିତ କରୁଛନ୍ତି। ସେହି ବ୍ୟକ୍ତିମାନେ କ୍ଷମତାସୀନ ହୋଇ ଅନ୍ୟାୟ ଉପାୟରେ ସ୍ୱାର୍ଥ ସାଧନ କରୁଛନ୍ତି। କ୍ଷମତାର ଅପବ୍ୟବହାର କରି ରାଜକୋଷ ଶୂନ୍ୟ କରି ଦେଉଛନ୍ତି। ମିଥ୍ୟା ପ୍ରତିଶ୍ରୁତି ପ୍ରଦାନ କରି ଶାସକ ଗୋଷ୍ଠୀର ପଦ ମର୍ଯ୍ୟାଦାକୁ କ୍ଷୁଣ୍ଣ କରୁଛି। ସେମାନେ ନିଜକୁ ଜନସାଧାରଣଙ୍କର ସେବକ ବୋଲି ମନେ କରୁ ନାହାନ୍ତି। ଦେଶର ବିଭିନ୍ନ ଯୋଜନା, ନିୟମ ଅନୁଯାୟୀ କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ ହୋଇ ପାରୁନାହିଁ। ସେମାନଙ୍କର କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ ବେଳେବେଳେ ଅଗ୍ରଗତି ପଥରେ ପ୍ରତିବନ୍ଧକ ସ୍ୱରୂପ ଦଣ୍ଡାୟମାନ ହେଉଛି। ନାଗରିକମାନଙ୍କୁ ସୁଶିକ୍ଷିତ କରିବା ପୂର୍ବକ ଶାସନତନ୍ତ୍ର ସମ୍ବନ୍ଧରେ ସଚେତନ କରାଯାଇ ପାରିଲେ ଅବସ୍ଥା କ୍ରମେ ସୁଧୁରୀଯିବ ବୋଲି ଆଶା କରାଯାଉଛି। ୧୯୪୭ ମସିହା ଅଗଷ୍ଟ ମାସ ୧୫ ତାରିଖରେ ଭାରତ ସ୍ୱାଧୀନତା ଲାଭ କଲା। ୧୯୫୦ ମସିହା ଜାନୁୟାରୀ ୨୬ ତାରିଖରେ ଏ ଦେଶ ଏକ ସାର୍ବଭୌମ ଗଣତାନ୍ତ୍ରିକ ସାଧାରଣତନ୍ତ୍ର ରାଷ୍ଟ୍ର ରୂପେ ପରିଚିତ ହୋଇ ଆସୁଛି। ଗଣତାନ୍ତ୍ରିକ ବ୍ୟବସ୍ଥା ସୂଚାରୁ ରୂପେ କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ ହେଲେ ସୁଫଳ ମିଳିବାର ସମ୍ଭାବନା ଉଜ୍ଜ୍ୱଳ । ଆମେରିକା ଓ ଭାରତ ଭଳି ବୃହତ ଗଣତାନ୍ତ୍ରିକ ରାଷ୍ଟ୍ରମାନଙ୍କର ଅତି ସାବଧାନର ସହ ଶାସନ ପରିଚାଳନା କଲେ ଜନସାଧାରଣଙ୍କର କଲ୍ୟାଣ ସାଧିତ ହେବ ଏବଂ ଗଣତନ୍ତ୍ର ତିଷ୍ଠି ପାରିବ। ଅଶିକ୍ଷିତ ବ୍ୟକ୍ତିମାନେ ଶାସନତନ୍ତ୍ରର ଗୁରୁତ୍ୱ ହୃଦୟଙ୍ଗମ କରିପାରୁନାହାନ୍ତି। ଏଥି ନିମନ୍ତେ ଗଣ ଚେତନା ଜାଗ୍ରତ କରି ଦେଶକୁ ସୁଦୃଢ଼ କରିବାକୁ ପଡିବ। ଏଥିପାଇଁ ଆମେ ସମସ୍ତେ ସଂଘବଦ୍ଧ ହୋଇ ଦୃଢ଼ ସଂକଳ୍ପ ନେବାକୁ ପଡିବ। ଆଶା ସମସ୍ତେ ମିଳିମିଶି ଦେଶକୁ ଏକ ସୁରାଷ୍ଟ୍ରରେ ପରିଣତ କରି ଦେଶର ନାଁ ଉଜ୍ଜ୍ୱଳ କରିବା।

ଜୟ ଭାରତ

ଜୟ ଜଗନ୍ନାଥ

ମମତା ରାଉତ
ଅନୁଗୁଳ

ମା

ସହରରୁ କିଛି ଦୂରରେ ଅବସ୍ଥିତ ଗୋଟେ ବସ୍ତିରେ ଜଣେ ମା' ଆଉ ତାର ୧୯ ବର୍ଷର ପୁଅ ଆଉ ଗୋଟେ ୨୨ ବର୍ଷ ର ଝିଅ ଭଙ୍ଗା କୁଡିଆରେ ରୁହନ୍ତି। ମା'ଟିର ବୟସ ୪୦ ବର୍ଷ। କମ୍ ବୟସରୁ ତା ଘରେ ତାକୁ ବିବାହ କରିଦେଇଥିଲେ।

ଦିନକର ଘଟଣା ସ୍ୱାମୀଟି ଅତ୍ୟନ୍ତ ମଦ୍ୟପାନ କରି ସ୍ତ୍ରୀ ପିଲାଛୁଆଙ୍କୁ ବାଇକ୍‌ରେ ବସେଇ ଯାଉଥିଲେ। ଛୁଆ ମାନେ ଛୋଟିଆ ଛୋଟିଆ ହୋଇଥାନ୍ତି। ବାଇକ୍‌ରେ ବସେଇ ରାସ୍ତାରେ ମଦ୍ୟପାନ କରି ବିନା ହେଲ୍‌ମେଟ୍‌ରେ ଗାଡ଼ି ଚଲାଇବା ହେତୁ ଏକ ଦୁର୍ଘଟଣାରେ ସ୍ୱାମୀଟିର ମୃତ୍ୟୁ ଘଟିଗଲା କିନ୍ତୁ ମା'ଏବଂ ପିଲା ଛୁଆ ବଞ୍ଚିଗଲେ।

ମା' ଟି ଅଷ୍ଟମ ଶ୍ରେଣୀ ଯାଏ ପାଠ ପଢିଥିଲା । ତାପରେ ତାର ବିବାହ କରିଦେଇଥିଲେ ଘର ଲୋକ। ହେଲେ ସ୍ୱାମୀ ମରିଗଲା ପରେ ପିଲା ଛୁଆଙ୍କୁ ମଣିଷ କରିବାକୁ ଯାଇ ମା' ଅନେକ ଯାଗା ଚାକିରି ଖୋଜିଛି। ହେଲେ ବିଧବା ଦେଖି କେତେ ଜଣ ଇଶ୍ୱର୍ଯ୍ୟରେ ଖରାପ ଆଚରଣରେ ଦେଖନ୍ତି ତ ଆଉ କିଛି ବିଧବା ଲୋକଟିର ଫାଇଦା ନେବାକୁ ଚେଷ୍ଟା କରନ୍ତି ତ ଆଉ କିଛି ପଇସା ମାଗନ୍ତି। ତେଣୁ ମା'ଟି ନିଷ୍ପତ୍ତି ନିଏ ସମସ୍ତଙ୍କ ଘର ଘର ଯାଇ ବାସନ ମାଜିବ ଏବଂ ରାତିରେ ମନ୍ଦିର ସାମ୍ନାରେ ଦୀପ, ଧୂପ ବିକି ନିଜର ପରିବାରର ଗୁଜୁରାଣ ମେଣ୍ଟାଇବ। ପୁଅ ଝିଅ ୨ ଜଣକୁ ପ୍ରାଇଭେଟ୍ ସ୍କୁଲ୍‌ରେ ମଧ୍ୟ ପାଠ ପଢ଼ାଏ। ତାଙ୍କୁ କେବେ ବି ଅନୁଭବ କରିବାକୁ ଦେଇନି ଆମେ ଗରିବ ବୋଲି ଅଭାବ ଅସୁବିଧା ତାଙ୍କ ମୁଣ୍ଡକୁ କେବେ ଭାବନା ନ ଆସୁ ସେଥିପାଇଁ ପୁଅ, ଝିଅ ଯାହା କୁହନ୍ତି ମା', ତାଙ୍କ ସବୁ କଥା ପୂରଣ କରେ।

ଏମିତି ଭଲରେ ତାଙ୍କ ପରିବାର ହସଖୁସିରେ ଚାଲିଥାଏ। ଦିନେ ଝିଅ ଅଧ ରାତିରେ ଘରକୁ ଫେରିଲା। ମା' ପଚାରେ ଏତେ ରାତି ଯାଏ କଣ କରୁଥିଲୁ କଉଠି ଥିଲୁ। ଝିଅ ଉତ୍ତର ଦିଏ ପ୍ରାକ୍ଟିକାଲ କ୍ଲାସ୍ ଚାଲିଥିଲା ମା'।

ମା' କହେ ହଉ ଯା ହାତଧୋଇ କି ଆସେ ମୁଁ ତୋ ପାଇଁ ଖାଇବା ବାଢୁଛି। ହେଲେ ମା' ପଛରେ ଜାଣିପାରେ ସେଦିନ ଝିଅ ଅଧ ରାତିରେ ନିଶାପାନ କରି ଘରକୁ ଫେରିଥିଲା ଏବଂ ଏକ ଯୁବକ ସହ ମିଶି ମଦ୍ୟପାନ କରିଥିଲେ ଦୁହେଁ। ଯେତେବେଳେ ଏହି ପ୍ରଶ୍ନ ମା' ତା ଝିଅକୁ ପଚାରେ ଝିଅ ମନା କରେ। ତା'ପରେ ମା' ଗୋଟେ ଚାପୁଡା ପକାଏ। ମୁଁ ଏତେ କଷ୍ଟ କରି ତମମାନଙ୍କୁ ପାଠ ପଢେଇଥିଲି କ'ଣ ଆଜି ଏହି ଦିନ ଦେଖିବାକୁ। ଝିଅ କିଛି ନ କହି ନିରବ ରୁହେ। ରାତି ପାହି ସକାଳ ହେଲା ଦେଖାଯାଏ ମା' ଉଠି ନିତ୍ୟକର୍ମ ସାରି ଠାକୁର ପୂଜା ସାରି ପୁଅକୁ ଉଠାଏ ସ୍କୁଲ ଯିବା ପାଇଁ। ଝିଅକୁ ମଧ୍ୟ ଡାକିବାକୁ ଯାଏ କିନ୍ତୁ ଦେଖେ ଝିଅ ନାହିଁ। ଗୋଟେ ଚିଠି ଲେଖାହେଇ ଥୁଆ ହେଇଛି। ଝିଅ ଲେଖିଛି ମା' ମୁଁ ଜାଣିଛି ତୁ ମୋ ଭଲପାଇବା ବିଷୟରେ ସବୁ ଜାଣିପାରିଛୁ। ମୁଁ ସେ ପିଲାକୁ ବହୁତ ଭଲପାଏ ତାକୁ ଛାଡି ବଞ୍ଚିପାରିବିନି। ସେଥିପାଇଁ ଆଜି ମୁଁ ନିଷ୍ପତ୍ତି ନେଇଛି ମୁଁ ଏ ଘର ଛାଡ଼ି ଦେବି। ଏହି ଲେଖା ପଢ଼ିବା କ୍ଷଣି ମା' ଭୋ ଭୋ ହୋଇ କାନ୍ଦି ପକାଏ। ଯିଏ ତତେ ୯ ମାସ ୯ ଦିନ ଗର୍ଭରେ ରଖି ଜନ୍ମ ଦେଇ ଛୋଟରୁ ବଡ଼ କରିଥିଲା ଆଜି ତୁ ତାକୁ ଛାଡ଼ିଦେଲୁ। ମା' କିନ୍ତୁ ସବୁବେଳେ ତା' ପିଲାମାନଙ୍କର ଭଲ ଚାହେଁ ହଉରେ ମା' ଯୋଉଠି ଥା ଭଲରେ ଥା। ଏହା ଭାବି ମା' ଠାକୁରଙ୍କୁ ଡାକେ। ସେହି ଚିନ୍ତାରେ ମା' ଟି ମୁଣ୍ଡ ବୁଲେଇ ହେଇ ପଡ଼ିଯାଏ କଣ ହେଲା କହି ଧାଇଁଆସେ ପୁଅ ଏବଂ ତୁରନ୍ତ ଆମ୍ବୁଲାନ୍ସକୁ ଫୋନ କରି ମେଡିକାଲ ନେଇଯାଏ। ଜଣାପଡ଼େ ମା' ଟିର ହାଇବିପି ଯୋଗୁ ମୁଣ୍ଡ ବୁଲେଇ ହୋଇ ପଡିଯାଇଥିଲା। ଡକ୍ଟର କହିଲେକି ତମ ମା'କୁ ବର୍ତ୍ତମାନ ପାରାଲିସିସ୍ ଏବଂ ଭଲ ହେବାକୁ ବହୁତ ଦିନ ଲାଗିବ।

ପୁଅଟି କୁହେ ହଉ ଡକ୍ଟର ଯେତେ ଟଙ୍କା ଲାଗିବ ଖର୍ଚ୍ଚ କରନ୍ତୁ ମୋ ମା' କୁ ଭଲ କରିଦିଅନ୍ତୁ । ଏହା କହି ପୁଅ ସେଠୁ ପଳେଇ ଆସେ ଏମିତି ଅନେକ ଦିନ ବିତି ଯାଏ। ମା' ଟିକୁ ଡକ୍ଟର ମାନେ ଭଲ କରିଦିଅନ୍ତି, କିନ୍ତୁ ମା' ଭଲ ହେଲା ପରେ ଯେତେବେଳେ ତା' ପୁଅକୁ ଖୋଜେ ହେଲେ ଦେଖେ ତା' ପୁଅ ନାହିଁ। ଜଣାପଡ଼େ ତା ପୁଅ ତା' ମା' କୁ ମେଡିକାଲରେ ଆଡମିଟ କଲାପରେ ସେ ଦିନଠୁ ଆଉ ଆସିନାହିଁ। ତା'ପରେ ଡକ୍ଟରମାନେ କୁହନ୍ତି ତୁମ ଡାକ୍ତରଖାନାର ଖର୍ଚ୍ଚ ପୂରଣ ହେଇଯାଉଚି। ଜଣାପଡ଼େ ମା'ଟି କାମ କରୁଥିବା ବାବୁଙ୍କ ଘରେ ଯୋଉ ବାସନମାଜେ ସେଇ ବାବୁ ହିଁ ତା'ର ମେଡିକାଲ ଖର୍ଚ୍ଚ ଭରଣ କରିଛନ୍ତି। ମା'ଟି କାନ୍ଦିପକାଏ ଏବଂ ଘରକୁ ଯାଏ ପୁଅ କଥା ଝିଅ କଥା ଭାବୁଥାଏ। ଦିନେ ଘରେ ସଂଧ୍ୟାରେ ଏକା ବସିଥାଏ ଆଖିରେ ପଡେ ଦେଖେ ଝିଅର ବହିଗୁଡ଼ାଏ ଥୁଆ ହେଇଛି ଗୋଟେ ବହି ଆଣି ଖୋଲେ ପଢିବାକୁ ଆରମ୍ଭ କରେ। ଏବଂ ଦିନରେ କାମ କରେ ଓ ରାତିରେ ପାଠ ପଢି ପରୀକ୍ଷା ଦିଏ ଏହିପରି ବର୍ଷ ବର୍ଷ ପରିଶ୍ରମ କରି ସବୁ ପରୀକ୍ଷା ଦିଏ ଏବଂ ଶେଷରେ ମା' ଟି ନାଲକୋ କମ୍ପାନୀରେ ଏକ ଛୋଟ ପୋଷ୍ଟରେ ଚାକିରି କରେ। ତାପରେ ସେଠି ତା'ର କାମରେ ସମସ୍ତେ ତା'ର ପ୍ରଶଂସା କରନ୍ତି ଭଲ ଦରମା ମଧ୍ୟ ପାଏ ଏବଂ ଅଫିସ୍‌ର ସାଙ୍ଗ ସାଥୀ, ସବୁ ଷ୍ଟାଫ୍‌ଙ୍କ ସହ ହସ ଖୁସିରେ ତା'ର ଦିନ ବିତେ ଏବଂ ଖୁସିର ଜୀବନ ଉପଭୋଗ କରେ।

ଜୟ ମା' !

ଝୁନା ରାଣୀ ରାଉତ୍
ଭୁବନେଶ୍ୱର

Celebrating International Women's Day: Recognizing Emotions and Empowering Women

International Women's Day, observed on 8th of March every year, is a global celebration for commensurating achievements w.r.t the social, economic, cultural and political accomplishments of women.

The Silent Struggle:

Despite of various hindrences, women have been making significant contribution in various fields, many continue to grapple with emotional challenges, particularly in their roles as being wives, mothers, sisters, they continue to thrive as pillars of their families. It is disheartening to note that a substantial number of women experience depression due to a lack of reciprocation and understanding from their husbands, children, and society at large. The emotional burden often goes unnoticed, and it is high time that we acknowledge and address this silent struggle.

The Emotional Toll:

The emotional toll on women cannot be overstated. Juggling multiple responsibilities, societal expectations, and personal aspirations can be overwhelming. The lack of emotional support can lead to feelings of isolation, despair, and eventually leads to depression. Recognizing and addressing these emotional struggles is essential for fostering a supportive environment that enables women to thrive.

Empathy and Understanding:

This International Women's Day, let's shift our focus from celebrating women's achievements to understand and empathize their emotional experiences. It is crucial for family members, husbands, children, and society as a whole to recognize the emotional needs of women and provide a nurturing environment. Empathy is the key to break the cycle of emotional neglect and fostering healthier relationships.

Support Systems:

Creating support systems for women is imperative in combating depression. Family members should actively engage in open communication, ensuring that women feel heard and valued. Husbands and children play a pivotal role in providing emotional support, acknowledging the challenges women face, and appreciating their contributions.

Creating a robust support system for women is crucial in fostering emotional well-being and maintaining dignity in society. In workplace, it's essential to offer facilities such as flexible working hours, on-site childcare, and maternity leave to help women balance their professional and family lives effectively. Additionally, implementing mentorship programs, promoting diversity and inclusion, and ensuring equal opportunities contribute to a supportive work environment where women can thrive. Recognizing and addressing the unique challenges women face at home and work is vital for building a more inclusive and equitable society.

Breaking the Stigma:

Recognizing the vital role women play in nation-building, workplace considerations for promotions and transfers should acknowledge the multifaceted contributions they make. As mothers, women actively shape the future by instilling crucial values in their families. Despite maternity responsibilities, many highly talented women contribute significantly to their professions, and their dedication should be acknowledged and rewarded. Encouraging the retention and progression of talented women in the workforce ensures a diverse and enriched environment that benefits both the workplace and the nation as a whole.

Conclusion:

This International Women's Day calls for a deeper focus on women's emotional well-being. Recognizing, understanding, and addressing their daily struggles is crucial for creating a supportive and empathetic society. Celebrate women not just for their achievements but for the resilient pillars they are, standing beside them in their journey towards happiness and fulfillment. By fostering an environment that values women's emotions, we empower them to lead fulfilling lives.

Rajashree Pradhan

Angul

Cyber Security

Cybersecurity is the practice of protecting computer systems, networks, and devices from unauthorized access, theft, damage, or disruption of information or services they provide. It has become an essential aspect of business operations and personal life. One of the pioneers and fathers of cybersecurity is Bob Thomas. In the 1970s, he co-authored two seminal papers on computer security, "Protection in Operating Systems" and "A Hardware Architecture for Implementing Protection Rings." These papers laid the foundation for modern computer security and helped to establish the field of cybersecurity.

The primary purpose of cybersecurity is to protect sensitive and confidential information, such as personal data, financial information, trade secrets, and intellectual property.

Cybersecurity also helps to ensure the reliability and availability of critical systems. A cyber-attack on these systems could have severe consequences, leading to service disruptions, financial losses, or even loss of life.

The world of Cyber Security revolves around the industry standard of confidentiality, integrity, and availability (CIA) of digital information by preventing unauthorized access, detecting and responding to attacks, and recovering from security breaches. The main element of Cyber Security is the use of authentication mechanisms. The six pillars of cybersecurity are governance, risk management, compliance, education and training, incident management, and technical controls. By focusing on above, organizations can create a culture of cybersecurity and protect themselves against potential cyber-attacks.

Categories of CyberSecurity:

- ➢ Network Security
- ➢ Endpoint Security
- ➢ Information Security
- ➢ Cloud Security
- ➢ IoT Security
- ➢ Mobile Security
- ➢ Operational security
- ➢ Identity & Access Management (IAM)
- ➢ Disaster recovery and business continuity
- ➢ End-user education

Types of Cyber Crimes

The threats countered by cyber-security are three-fold:

1. Cybercrime: Any unauthorized activity involving a computer, device, or network.
2. Cyber-attack: Often involves politically motivated information gathering.
3. Cyberterrorism: Intended to undermine electronic systems to cause panic or fear.

Cyber threats can take many forms, such as viruses, malware, ransomware, phishing attacks, social engineering, hacking, and denial-of-service attacks. Cybersecurity aims to prevent these threats from causing harm by identifying and addressing vulnerabilities in computer systems and networks.

- Malware: It is a form of malicious software in which any file or program can be used to harm a computer user. Different types of malware include worms, viruses, Trojans and spyware.
- Worms: A worm is a type of malware or malicious software that can replicate rapidly and spread across devices within a network. As it spreads, a worm consumes bandwidth, overloading infected systems and making them unreliable or unavailable. Worms can also change and delete files or introduce other malware.
- Virus: A self-replicating program that attaches itself to clean file and spreads throughout a computer system, infecting files with malicious code.
- Trojans: A type of malware that is disguised as legitimate software. Cybercriminals trick users into uploading Trojans onto their computer where they cause damage or collect data.
- Spyware: A program that secretly records what a user does, so that cybercriminals can make use of this information. For example, spyware could capture credit card details.
- Ransomware: It is another type of malware that involves an attacker locking the victim's computer system files -- typically through encryption -- and demanding a payment to decrypt and unlock them.
- Adware: Advertising software which can be used to spread malware.
- Botnets: Networks of malware infected computers which cybercriminals use to perform tasks online without the user's permission.
- SQL injection: SQL (structured language query) injection is a type of cyber-attack used to take control of and steal data from a database. Cybercriminals exploit vulnerabilities in data-driven applications to insert malicious code into a databased via a malicious SQL statement. This gives them access to the sensitive information contained in the database.
- Social Engineering: It is an attack that relies on human interaction. It tricks users into breaking security procedures to gain sensitive information that is typically protected.

- Phishing: It is a form of social engineering where fraudulent email or text messages that resemble those from reputable or known sources are sent. Often random attacks, the intent of these messages is to steal sensitive data, such as credit card or login information.
- Spear phishing: It is a type of phishing that has an intended target user, organization or business.
- Insider threats: These are security breaches or losses caused by humans -- for example, employees, contractors or customers. Insider threats can be malicious or negligent in nature.
- Distributed denial-of-service (DDoS): These attacks are those in which multiple systems disrupt the traffic of a targeted system, such as a server, website or other network resource. By flooding the target with messages, connection requests or packets, the attackers can slow the system or crash it, preventing legitimate traffic from using it.
- Advanced persistent threats (APTs) : These are prolonged targeted attacks in which an attacker infiltrates a network and remains undetected for long periods of time with the aim to steal data.
- Man-in-the-middle (MitM): These are attacks are eavesdropping attacks that involve an attacker intercepting and relaying messages between two parties who believe they are communicating with each other.

Other common attacks include botnets, drive-by-download attacks, exploit kits, malvertising, vishing, credential stuffing attacks, cross-site scripting (XSS) attacks, SQL injection attacks, business email compromise (BEC) and zero-day exploits.

Cybersecurity vendors and tools:

Vendors in the cybersecurity field typically offer a variety of security products and services. Common security tools and systems include:

- Identity and access management (IAM)
- Firewalls
- Endpoint protection
- Antimalware/antivirus
- Intrusion prevention/detection systems (IPS/IDS)
- Data loss prevention (DLP)
- Endpoint detection and response
- Security information and event management (SIEM)
- Encryption tools
- Vulnerability scanners
- Virtual private networks (VPNs)
- Cloudworkloadprotectionplatform(CWPP)
- Cloud access security broker (CASB)

Well-known cybersecurity vendors include Check Point, Cisco, Code42, CrowdStrike, FireEye, Fortinet, IBM, Imperva, KnowBe4, McAfee, Microsoft, Palo Alto Networks, Rapid7, Splunk, Symantec by Broadcom, Trend Micro and Trustwave.

Scope of Automation in CyberSecurity:

- Threat detection
- Threat response
- Human augmentation

Well-known cybersecurity vendors include Check Point, Cisco, Code42, CrowdStrike, FireEye, Fortinet, IBM, Imperva, KnowBe4, McAfee, Microsoft, Palo Alto Networks, Rapid7, Splunk, Symantec by Broadcom, Trend Micro and Trustwave.

Conclusion:

The importance of cyber security is enormous. Without proper or solid cyber security solutions, it would be next to impossible to safeguard and keep the data confidential. The most difficult challenge in

the cyber security industry is technological advancement, which provides cybercriminals with an ever-expanding list of potential exploitation opportunities. Hence, in order to spread awareness of the importance of cyber security among individuals, 28th January is observed globally as Data Protection Day. The main goal of commemorating this day is to promote privacy and raise awareness about best practices in data protection.

So, we as an individual and as an industry should be always vigilant and keep a consistent eye for the successful implementation of all cybersecurity solutions following all best practices time to time, then only we can be able to preserve the lifestyle choices we have already come to appreciate and enjoy.

Swayam Prabha Devi

Angul

INTERNATIONAL WOMEN'S DAY

A woman is the most beautiful and powerful creation of God. Behind our existence there is a woman. Womanhood involves love, affection, caring, power etc. that comes under different personalities in life. Everything a woman does in our lives by sacrificing her comfort is always priceless and should be appreciated.

But somewhere in our society, women are still underestimated and is believed that men are superior to women. Although, a man exists only because he had been given birth by a woman. Empowering women is a big responsibility but it is also vital for gender equality. Furthermore, society gets benefitted when women are treated with respect and are not treated as second-class citizens. Women's participation strengthens the society and makes economies more dynamic. How can we expect to grow in a world where women are not involved in decision-making? Women should be respected not because of the gender but for their own identity. We've to accept that both men and women contribute equally to the betterment of the society. Each and every woman is special no matter where she works- at home or at office.

International women's day is celebrated on 8th March every year around the world. It's the day dedicated to celebrate women's achievement in various fields. It started during the great unrest of 1908 in the city of New York. In India the glass ceiling was broken when a woman leader, Mrs. Indira Gandhi, for the first time reached one of the highest positions of the country. The objective of the International women's day is- to celebrate the struggle for women's rights in the economic, social, political and cultural domain, to reaffirm women's solidarity in the struggle for peace and to show what women have achieved.

Entire feminine category present in this nation has to lead this world to an extraordinary extent. This single day is way too concise to appreciate the things women do on both personal and professional and of their lives. The international women's day should be considered a day where everyone acknowledges the value and importance of women in our lives and all around the world.

Manisha Nath

Bhubaneswar

Bose is Alive!

MALGUDI

"Comrades," Arun began, his voice quivering with feigned solemnity, "the time has come to fight for our motherland!" Sushila, wrapped in a simple sari that had seen better days, played along, her voice adopting the tone of a seasoned freedom fighter.

"Yes, Netaji! Lead us into battle, and we shall not falter!" Their laughter filled the room, a beautiful respite from the world outside, where the shadows of colonial rule and the whispers of rebellion mingled in the air.

As the game came to a close with Arun's dramatic call to arms, Sushila ushered him towards the dining table, where a modest meal awaited. Later, she tucked Arun into bed, and sang a lullaby, her voice a soothing balm to the excitement of the evening.

With Arun lost to the world of dreams, Sushila retreated to her room. Here, the playful mother was replaced by a figure of resolve. She carefully donned her disguise, a symbol of her secret life as a comrade of the Indian National Army. Tonight, like many nights before, she would step out into the darkness, armed with pamphlets and a fierce determination to awaken the spirit of freedom in her fellow countrymen.

Arun, however, was not asleep. He had seen the hidden pamphlets, the letters written in the dead of night, and he knew of his mother's double life. Every night, he waited for the sound of her return, a silent vigil tinged with pride and worry.

In the quiet of his room, Arun found comfort in imaginary conversations with his hero, Subhash Chandra Bose. "Netaji," he would say, his voice barely a whisper, "when will you come and free us?"

And the imagined Bose, always kind, always reassuring, would reply, "Soon, Arun. Freedom is on the horizon. I will come visit you, and then we will play on the streets of Malgudi till midnight!"

But that night, Sushila did not return. The dawn broke with no sign of her, and Arun, his heart sinking with a dread he had never known, set out into the waking town of Malgudi, in search of his mother.

THE TRAGEDY

The square was crowded, more than usual, the air thick with whispers and solemn faces. Arun pushed through, his small frame slipping between adults, until he reached the front. And there, before his eyes, was a sight that would haunt him forever. Hanging from the British gallows were several figures, still and silent, their final defiance etched into their lifeless faces. Among them was Sushila, his mother, a silent martyr for the cause she believed in.

A collective grief hung over the crowd, but for Arun, the world came crashing down to a deafening silence. Tears welled up in his eyes, blurring his vision, as he stood frozen, a small boy lost in a sea of sorrow.

It was then, in his darkest moment, that he felt a presence beside him. Turning, he found

himself looking into the eyes of his imaginary friend, Subhash Chandra Bose, more real to him now than ever before.

"Don't cry, young soldier," the imaginary Bose said, his voice a steady anchor in the storm of Arun's emotions. "This is not the end, but a beginning. Your mother was a hero, a true patriot. It's our duty to carry on her legacy."

"But how?" Arun's voice was barely a whisper, choked by tears. "How do I go on without her?"

"Look to your left," Bose guided gently.

Arun turned, his gaze falling upon a young girl, no older than he was, crying beneath the gallows where her father hung. In her eyes, he saw his own reflection, a mirror of loss and despair.

"This is how," Bose continued. "By standing together, by being there for those who have also lost. You're not alone in this fight, Arun. Remember, the struggle for freedom is carried on the shoulders of the young and brave like you."

Wiping away his tears, Arun approached the girl, his steps hesitant at first but growing steadier with each move. "I'm Arun," he said softly, extending a hand of friendship. "I lost my mother today. I... I know how it feels. Maybe we can help each other."

The girl looked up, her eyes meeting Arun's. In that moment, an unspoken bond was formed, born from shared tragedy and a mutual understanding that only those who have felt such loss could know.

Together, they found refuge in an abandoned shed on the outskirts of Malgudi, a place they could call safe, at least for now.

THE LAMPS

Amidst the backdrop of a divided Malgudi, finding jobs was difficult. More so with the British hunting you and your family by the day. An old lamp maker in the old town agreed to give him a job at night. Under the cloak of night, Arun's journey to the lamp maker's shop had become a ritual. But he was never truly alone; his conversations with the imaginary Bose filled the silence, offering guidance and solace.

One night, as Arun meticulously crafted lamps under the watchful eyes of the lamp maker, he murmured to Bose, "Netaji, do you think this will make a difference? Making lamps while the world outside is breaking apart?"

The lamp maker, overhearing Arun's one-sided dialogue, smiled gently. "Every light we kindle pushes back the darkness, Arun. Remember, it's not just lamps we're making; it's hope we're crafting."

Later, as he shared a meager meal with the girl, he recounted his conversation with Bose and the lamp maker. "Bose says we're fighting our own kind of battle, just like the soldiers," he explained, his voice a mix of pride and uncertainty.

The girl, her eyes reflecting the flicker of their makeshift lamp, nodded. "And the lamp maker is right too. These lamps, they're like little beacons of hope. Maybe we're more like freedom fighters than we thought."

But as the days turned into weeks, and the weeks into months, the shadow of partition loomed large over Malgudi. Riots broke out, curfews were imposed, and the streets that once echoed with the laughter of children now whispered tales of fear and separation.

Arun's nightly journeys became a game of shadows, moving stealthily to avoid the patrolling British soldiers. Yet, the lamp maker's shop always remained open to him, a secret haven where Arun could earn the means for him and the girl to survive another day.

Until one fateful night, when everything changed.

THE REDEMPTION

As Arun neared the shop, a sense of unease settled over him. The usual quiet was replaced by a low murmur of voices, and then he saw it - a British officer standing outside the door, his posture menacing in the dim light. The lamp maker was nowhere in sight. His heart sank as the officer turned, their eyes locking in a moment fraught with danger. The officer's lips curled into a smirk, sensing the fear in the young boy's eyes. He advanced, and Arun, realizing the threat, turned to run.

The officer was upon him in moments, his belt already in hand, a grim reminder of the power he wielded. Arun braced for the impact, closing his eyes against the fear and the pain he knew was coming. But before the belt could descend, a voice cut through the night, blasting out of the speakers in the town square loud and clear, carrying with it the weight of a hundred years of struggle.

"India has become independent! Jai Hind!"

The words hung in the air, a moment suspended in time. The officer paused, his grip on the belt loosening as the reality of the announcement sank in. Around them, the streets of Malgudi erupted in celebration, a cacophony of joy and relief that drowned out the darkness of the night.

Arun looked up, his heart pounding not with fear, but with an overwhelming sense of liberation. The British officer, now a symbol of a bygone era, backed away, his eyes betraying a hint of fear as the roles reversed in the light of India's newfound freedom.

Scrambling to his feet, Arun ran, not away from the officer, but towards the crowd, his spirit buoyed by the jubilation around him. His wait to play with Bose had finally come to an end. Independence had come, Bose must have had too. "Where is Bose?" he asked, one after another, the name of his hero, his imaginary confidant, on his lips. But each face he turned to shared the same somber news - Bose was no more.

Refusing to believe, Arun rushed back to the lampmaker's shop, his heart aching for the confirmation of his worst fear. There, amidst the chaos, he found the lamp maker, bruised and bleeding. With the greatest of anguish, he questioned the old man, "They tell me he is no more…Is it true ? Is Bose really gone without meeting me ?" Tears fill eyelids that had steeled themselves through the preceding chaos. The lamp maker smiled at him and pulled him into a tight hug. He placed his palm on the heart of the child, and whispered "Bose is alive my boy! Bose is alive within you!"

Susama Rani Dash
Angul

TOUCHING LIVES

भुवनेश्वर

44वें नालको स्थापना दिवस के अवसर पर तिमाही पत्रिका 'संगिनी' का विमोचन करते हुए नालको के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय, निदेशकगण, अध्यक्षा नालको महिला समिति तथा सम्पादन मण्डल के सदस्यगण

44वें नालको स्थापना दिवस के अवसर पर श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा महोदया के कर-कमलों से पुरस्कृत होती हुई नालको महिला समिति की सदस्याएँ

महाशिवरात्रि के अवसर पर लिंगराज मंदिर में भक्तजनों की सेवा हेतु लगाए गए स्टॉल का उद्घाटन करती हुईं श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा, नालको महिला समिति

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित वॉकिंग मैराथन में भाग लेती हुई श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा, नालको महिला समिति तथा अन्य सदस्याएँ

मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम 'माइंडफूल मनडे' के दौरान श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा, नालको महिला समिति तथा अन्य सदस्याएँ

नालको महिला समिति के संयुक्त प्रयास से आयोजित रक्तदान शिविर का उद्घाटन करते हुए श्री श्रीधर पात्र, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय तथा श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा, नालको महिला समिति

नालको महिला समिति के संयुक्त प्रयास से आयोजित रक्तदान शिविर के दौरान रक्तदान करते हुए श्री सोमनाथ हंसदा:, मुख्य सतर्कता अधिकारी

नालको महिला समिति के प्रयासों हेतु
उद्योग ऊर्जा का पुरस्कार ग्रहण हुए नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

जंगल सफारी में पिकनिक मनाते हुए श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा, नालको महिला समिति तथा अन्य सदस्याएँ

नालको महिला समिति के प्रयासों हेतु
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सम्मानित होते हुए श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा महोदया

नालको महिला समिति द्वारा आयोजित पाक-प्रतियोगिता के विजेताओं के साथ श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा, नालको महिला समिति

अनुगुळ

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लेती हुई नालको लेडिज क्लब, अनुगुळ की सदस्याएँ

रामलला के पूजन से नव वर्ष का शुभारम्भ करती हुई नालको लेडिज क्लब, अनुगुळ की सदस्याएँ

केदारगौरी नेत्रहीन आश्रम में स्वास्थ्य जांच, वस्त्र एवं खाद्य सामग्री वितरण करती हुई नालको लेडिज क्लब, अनुगुळ की सदस्याएँ

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नालको लेडिज क्लब, अनुगुळ की सदस्याओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन

दामनजोड़ी

घरेलू सहायिकाओं के साथ गणतंत्र दिवस मनाते हुए श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा, नालको महिला समिति

सूनाबेड़ा के मूक बधिर विद्यालय में बच्चों के उत्साह वर्धन के लिए आयोजित कार्यक्रम के दौरान श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा, नालको महिला समिति तथा अन्य सदस्याएँ

दामनजोड़ी में नालको महिला समिति की सदस्याओं द्वारा आयोजित मेला

नालको लेडीज क्लब, दामनजोड़ी की सदस्याओं द्वारा श्रीमती नादिरा खान का अभिनंदन

नालको लेडीज क्लब, दामनजोड़ी की सदस्याओं द्वारा श्रीमती कविता साहू का अभिनंदन

नालको लेडीज क्लब, दामनजोड़ी की सदस्याओं द्वारा श्रीमती नमिता पंडा का अभिनंदन

Readers are requested to send their write ups, suggestions and feedback to nmssangini@gmail.com in clear handwriting or soft copy before 15th February 2024 - Editor-in-Chief

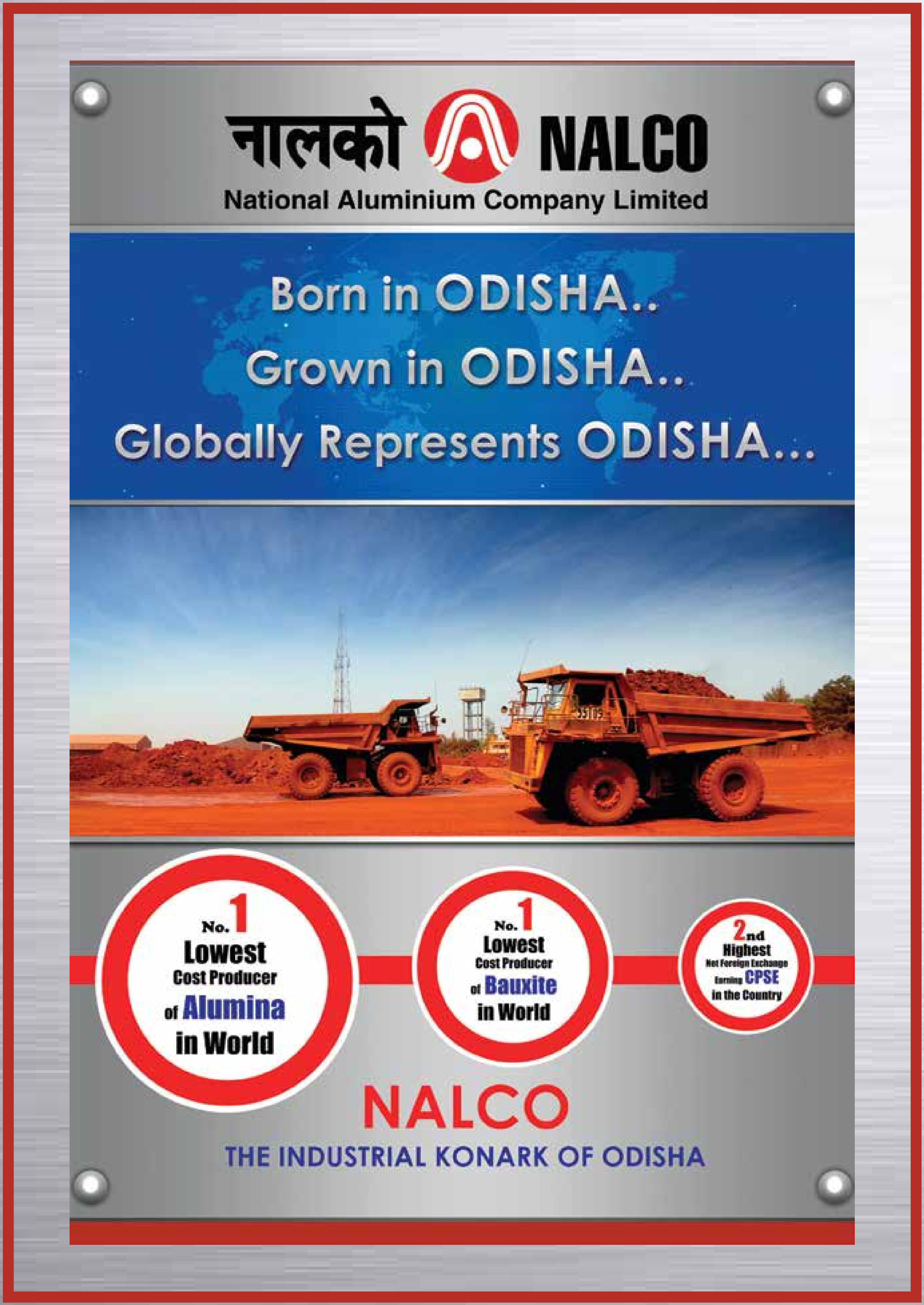

Designed and printed by sanket